साना-साना हाथ जोड़ि .....

- मधु कांकरिया

मोड्यूल-3

लायुंग में रात्रि पड़ाव

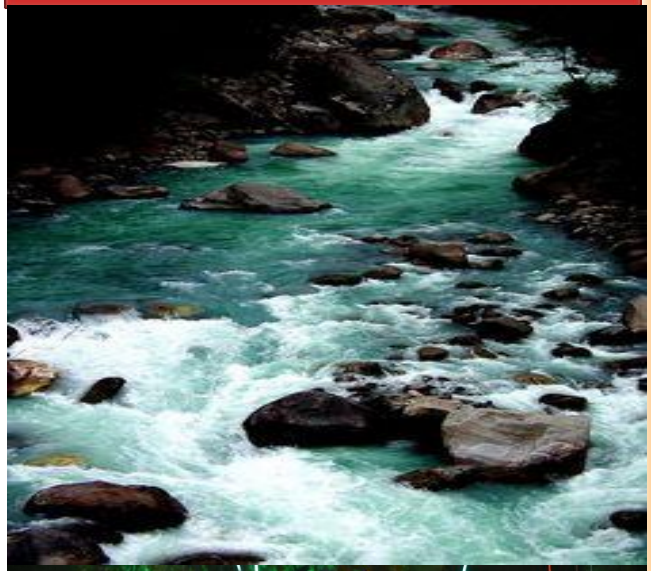

लेखिका ने तिस्ता नदी के किनारे बने लकड़ी के छोटे से घर में रात्रि बिताई। शीतल हवा में झूमते पौधे बादलों से ढ़ँका चाँद वातावरण में अद्भुत शांति मंदिर में बजती घंटियों की आवाज़ और साथ ही एक सुख-शांति भरा सकून। रात गहराने के साथ ही हिमालय ने भी काला कंबल ओढ़ लिया। गाने की एक तेज़ धुन पर जब जितेन ने नाचना शुरू किया तो एक-एक कर सभी सैलानियों ने नृत्य शुरू कर दिया। पचास वर्षीया मणि ने ऐसा नृत्य किया जो कुमारियों को भी मात दे सकता था। लायूंग की सुबह तिस्ता नदी की भाँति शांत थी। यहाँ के लोग पहाड़ी आलू, धान की खेती और दारू का व्यापार करते हैं। लेखिका को यहाँ के पहाड़ किसी जन्नत से कम नहीं लग रहे थे, पर आजकल बढ़ते प्रदूषण के बीच बर्फ़ गिरनी लगातार कम होती जा रही है। लेखिका को एक सिक्कमी युवक ने बताया कि कटाओं स्थान पर निश्चित रूप से बरफ़ देखने को मिल जाएगी।

कटाओ की यात्रा

उम्मीद, आवेश और उत्तेजना के साथ कटाओं के खतरनाक रास्ते का सफ़र शुरू हुआ। पहाड़ पेड़ आकाश और घाटियाँ सभी बादलों से ढँकी। बादलों को चीरकर आगे बढ़ती जीप का सफ़र भय और रोमांच की अनुभूति करा रहा था। जगह-जगह चेतावनियों के बोर्ड हमारी खामोशी बढ़ा रहे थे। धुंध छटने के साथ ही जितेन कहने लगा, "कटाओ हिन्दुस्तान का स्विट्जरलैंड है।" कटाओ के करीब आते ही बरफ़ के पहाड़ दिखने लगे थे। ऐसा लगता था जैसे किसी ने इन पर बरफ़ छिड़क दी हो। जितेन बता रहा था कि यह रात में गिरी हुई ताज़ी बरफ़ है। चारो ओर साबुन के झाग-सी बिखरी बरफ़ दिख रही थी। अब सारे सैलानी जीप से उतरकर बरफ़ पर कूद रहे थे, घुटनों तक नरम-नरम बरफ़। कई सैलानी यह सब कुछ कैमरों में कैद करने में जुटे थे। लेखिका भी बरफ़ पर लेटना चाहती थी पर उसके पास बरफ़ पर पहनने वाले जूते न थे। इधर कटाओ पर एक भी दुकान नहीं थीं। लेखिका ऐसे दृश्य को अपने अंदर उतारे जा रही थी और दिव्यता में खोती जा रही थी।

‘हिमशिखर प्राकृतिक जल स्तंभ’

हिमशिखर

लेखिका की सहेली मणि कह रही थी कि ये हिमशिखर पूरे एशिया के जल स्तंभ हैं। प्रकृति इनमें अद्भुत तरीके से जल संचित कर लेती है और गर्मियों में यही बरफ़ पिघल कर लोगों की प्यास बुझाती है। मणि ने नदियों के ऋण को याद कर सिर नवा दिया।

यहीं से कुछ दूरी पर चीन की सीमा है। लेखिका ने वहाँ का माइनस 15 डिग्री सेल्सियस तापमान जानकर फ़ौजी से उनकी तकलीफ़ों की बातचीत की तो उसने बताया आप चैन की नींद सो सके, इसलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं। लेखिका इन सैनिकों और यहाँ के लोगों के जीवन की कठिनाइयों की अनुभूति कर उदास हो उठी।

कटाओ से वापसी

रुडोडेन्ड्रो का फूल

लेखिका ने लौटते हुए यूमथांग की घाटियों में ढ़ेरों प्रियुता और रुडोडेंड्रो के फूल देखे। जितेन बता रहा था कि पन्द्रह दिनों में पूरी घाटी फूलों से भर जाएगी। अब चौड़े होते रास्ते पर खतरे का अहसास कम हो रहा था। यूमथांग में एक सिक्कमी युवती से लेखिका ने पूछा, 'क्या तुम सिक्कमी हो ?' उसने कहा, 'नहीं मैं इंडियन हूँ।' लेखिका को जानकर अच्छा लगा कि सिक्किम के लोग भारत से मिलकर खुश हैं। स्वतंत्र रजवाड़ा रहने तक यहाँ का पर्यटन उद्योग विकसित नहीं हो पाया था। अब तो लगता ही नहीं कि सिक्किम कभी भारत का अंग नहीं था।

इसी बीच एक पहाड़ी कुत्ते को देखकर मणि ने बताया कि ये पहाड़ी कुत्ते हैं, जो भौंकते नहीं है। ये सिर्फ चाँदनी रात में भौंकते हैं।

गुरुनानक के फुट प्रिंट

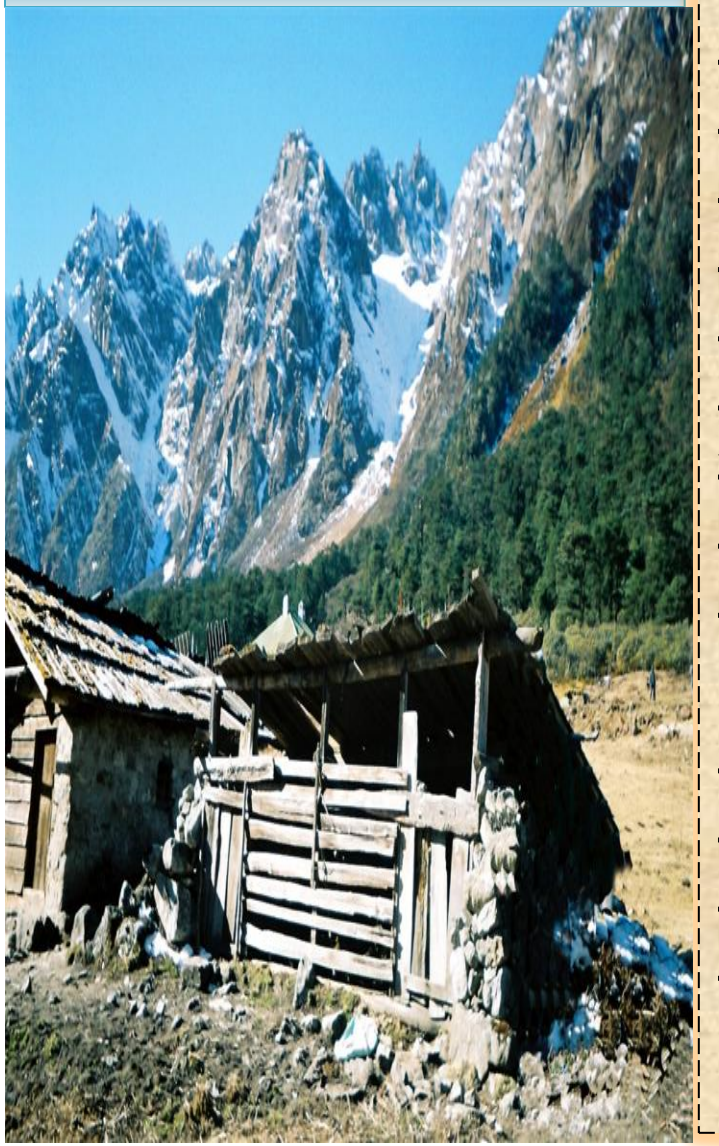

लौटते समय जितेन ने बताया कि यहाँ के एक पत्थर पर गुरुनानक के फुट प्रिंट हैं। यहीं गुरुनानक की थाली से कुछ चावल गिर गये थे। अब उन्हीं जगहों पर चावल की खेती होती है। उसने खेदुम नामक स्थान के बारे में बताया, जहाँ गंदगी फैलाने वाला मर जाता है। यहाँ एक किलोमीटर के एरिया में देवी-देवताओं का निवास है। उसने यह भी बताया कि गैंगटॉक का असली नाम गंतोक है, जिसका अर्थ है – पहाड़।

लेखिका देख रही थी कि नये-नये स्थानों की खोज़ के लिए अब भी नए-नए रास्ते बनाए जा रहे हैं। इसी असमाप्त खोज का नाम ही तो सौंदर्य है। उसकी जीप आगे बढ़ती जा रही थी।

शब्दार्थ

सजग – सावधान, नरभक्षी – मनुष्यों को खा जाने वाले, चटक – गहरा
सुखी स्वर्णिम – सोने के रंग वाली, सात्विक – पवित्र, आभा – चमक
छटा – सुंदरता, असह्य – जो सहा न जा सके, मद्धिम-मद्धिम – धीरे-धीरे
परिंदे – पक्षी, अनायास – अपने आप, अक्षम – जो क्षमा करने योग्य न हो
शिलाओं – चट्टानों, स्मृति – याददाश्त, हलाहल – विष, सुरम्य – सुंदर
संक्रमण – मिलन या मेल, मात करना – हराना, कतरा – बूँद
सी लेवल – समुद्र तल, स्नोफाल – बरफ़ का गिरना,शर्तिया– निश्चित रूप से
गुडुप कर लेना – निगल लिया, अंदाज़ – अनुमान, चूक – गलती/भूल
खलास – खत्म, प्रतिवाद – विरोध में कुछ कहना, राम राछो – अच्छा है
रंगत – चमक/सुंदरता, ख्वाहिश – इच्छा, टूरिस्ट स्पॉट – पर्यटन स्थल
डार्क रूम – अंधेरे वाला कमरा, विभोर – प्रसन्न, वृत्त – आदत, कंठ – गला
सर्वे भवन्तु सुखिनः – सभी सुखी हों, नायब – अद्भुत, सेज – बिस्तर
मीआद – समय सीमा, टूरिस्ट - पर्यटक, फलना-फूलना – विकसित होना
आबोहवा –जलवायु, विस्मय – आश्चर्य, फुट प्रिंट – पैरों के निशान,कामना -इच्छा